चौथ आयी और बोली, 'करवा पिला तू करवा पिला भाइयों की प्यारी करवा ले ।दिन में चांद देखने वाली करवा पिला।'जब वो बोली कि 'हे! चौथ माता मेरा उजड़ा हुआ सुहाग तो आपको ही बनाना पड़ेगा ।मेरे पति को जिन्दा करना पड़ेगा ।मुझे मेरी गलती का पश्चाताप है, मैं आपसे माफी मांगती हूँ ।तब चौथ माता बोली मेरे से बड़ी बैसाख की बैसाखी चौथ आयेगी वो तुझे सुहाग देगी।' इस तरह बैसाखी चौथ आयी और उसने कहा की भादवे की चौथ तुझे सुहाग देगी।तब कुछ महिने बाद भादुड़ी चौथ माता स्वर्ग से उतरी और वही सब बात कहने लगी, तब उसने चौथ माता के पाँव पकड़ लिये।चौथ माता बोली कि तेरे ऊपर सबसे बड़ी कार्तिक की करवा चौथ माता है।वह ही नाराज हुई है, यदि तूने उसके पैर छोड़ दिये तो फिर कोई भी तेरे पति को जिन्दा नहीं कर सकता है। कार्तिक का महिना आया, स्वर्ग से चौथ माता उतरी, चौथ माता आयी और गुस्से से बोली 'भाइयों की बहन करवा ले, दिन में चांद उगानी करवा ले, व्रत भांडनी करवा ले ।' साहूकार की बेटी ने चौथ माता के पैर पकड़ लिये व विलाप करने लगी– हे ! चौथ माता मैं नासमझ थी, मुझे इतना बड़ा दण्ड मत देवों ।तब चौथ माता बोली– मेरे पैर क्यों पकड़कर बैठी है। तब वह बोली मेरी बिगड़ी आपको बनानी ही पड़ेगी मुझे सुहाग देना ही पड़ेगा ।क्योंकि आप सब जग की माता है और सबकी इच्छा पूरी करने वाली है ।तब चौथ माता खुश हुई और उसे अमर सुहाग का आशीर्वाद दिया ।इतने में उसका पति बैठा हो गया और बोलने लगा मुझे बहुत नींद आयी।वह बोली मुझे तो बारह महिने हो गये, मुझे तो चौथ माता ने सुहाग दिया है।तब पति बोला कि चौथ माता का विधि– विधान से उजमन करो।उधर ननद रोटी देने आयी तो उसने दो जने के बोलने की आवाज सुनी तो अपनी माँ को जाकर बोली कि भाभी तो पता नहीं किससे बातें कर रही है।तब सासू ने जाकर देखा कि बहू व बेटा दोनों जीम रहे हैं व चौपड़ पासा खेल रहे है।देखकर वह बहुत खुश हुई और पूछने लगी ये कैसे हुआ बहू बोली यह सब मुझे मेरी चौथ माता ने दिया है और सासूजी के पैर छूने लगी और सास ने अमर सुहाग की आशीष दी ।दूर खड़े हुये पति–पत्नी का गठबन्धन जुड़ गया और सब चौथ माता का चमत्कार मानने लगे ।